किसान भाई करें खीरे की आधुनिक उन्नतशील खेती

कृषि कुंभ (जुलाई 2023),
खण्ड 03 भाग 02, पृष्ठ संख्या 169–171

किसान भाई करें खीरे की आधुनिक उन्नतशील खेती

लव कुमार
[1]शोध छात्र, सब्जी विज्ञान विभाग
[1]आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
कुमारगंज अयोध्या उत्तर प्रदेश, भारत।

Email Id: laukumar77@gmail.com

वैज्ञानिक नाम– क्युक्यूमिस स्टीवंम
कुल– कुकुरबीटेशी
गुणसूत्र संख्या –14

खीरा भारत में सबसे ज्यादा बोई जाने वाली प्रसिद्ध फसल है। खीरा की उत्पत्ति भारत से ही हुई है। इसके फल को हम सलाद के रूप में खाते हैं। सलाद के साथ इसका आचार भी बनाया जाता है। खीरा के बीज में सर्वाधिक आयुर्वेदिक औषधि गुण उपलब्ध हैं। इसके फल को गर्मियों में खाने से कब्ज जॉन्डिस जैसी बीमारी से निवारण मिलता है। इसके फल में विटामिन बी की अधिक मात्रा पाई जाती है।

पोषक तत्व

पोषक तत्व	मात्रा प्रति 100 ग्राम
वसा	0.1 ग्राम
आयरन	1.5 मिलीग्राम
कैल्शियम	10 मिलीग्राम
प्रोटीन	0.4 ग्राम
खनिज पदार्थ	0.3 ग्राम
सल्फर	17 मिलीग्राम
फास्फोरस	25 मिलीग्राम
फाइबर	0.4 ग्राम

यह एक गर्म जलवायु की फसल है पर इसका फल स्वभाव का ठंडा होता है इसकी खेती देश के सर्वाधिक क्षेत्रों में प्राथमिकता के आधार पर की जाती है। यह सर्वाधिक खाने वाला सलाह दिए फल है।

जलवायु

खीरे की जलवायु के लिए अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 20 डिग्री सेल्सियस होना चाहिए। खीरे में अच्छे फल के लिए 25 डिग्री सेल्सियस से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान बहुत अच्छा होता है। अधिक तापमान और प्रकाश में नर फूल अधिक निकलते हैं जबकि इसके विपरीत मौसम होने पर मादा फूलों की संख्या अधिक होती है। अधिक बारिश में उमस होने से कीट और रोगों में अधिक वृद्धि हो जाती है।

भूमि का चयन

खीरे की खेती सभी प्रकार की मिट्टी में कर सकते हैं यदि काली दोमट मिट्टी हो तो वह बहुत उपजाऊ होती है। खीरे की खेती नदियों तालाबों के किनारे भी आसानी से की जा सकती है परंतु आप को यह बात का ध्यान रखना जरूर पड़ेगा कि खेत में अधिक पानी होने पर उसका निकास भी होना चाहिए।

खेत की तैयारी

खेत की तैयारी करते समय मिट्टी पलटने वाले हल से दो से तीन बार जुताई करना चाहिए। उसके बाद हैरो या कल्टीवेटर से मिट्टी को भुरभुरा बना देना चाहिए। इसके बाद एक बार पाटा लगाकर खेत को समतल कर देना चाहिए और यदि इसमें खाद देना चाहते हो तो गोबर की खाद 12 से 18 टन गोबर की सड़ी वाली खाद एक हेक्टेयर में मिट्टी में अच्छी तरह से मिला देना चाहिए।

उन्नत किस्में

खीरे की खेती के लिए उन्नत किस्में आपके मौसम के अनुकूल रहती हैं। वह आपके क्षेत्र में प्रचलित किस्मों का ही चयन करना चाहिए। इसमें कई प्रकार की उन्नत किस्में है–

संकर किस्म

स्वर्ण पूर्णिमा ,पूसा बरखा

विदेशी किस्में

- जैपनीज लोंग ग्रीन
- सिलेक्शन
- पूसा संयोग ,पूसा उदय ,स्वर्ण अगेती

आदि कई प्रकार की किस्में है। अपने क्षेत्र के हिसाब से किसानों का चयन करना चाहिए।

बुवाई का समय

खीरा मुख्यता गर्मी एवं बरसात दोनों ऋतु में बोई जाने वाली फसल है खीरा को गर्मी के मौसम में जनवरी से आखरी फरवरी तक और बरसात में जून जुलाई माह में पर्वतीय क्षेत्र पर अप्रैल में बोई जाती है। खीरे की दूरी रो टू रो डेढ़ से ढाई मीटर प्रजाति के हिसाब से बोई जाती है और प्लांट टू प्लांट की दूरी 60 से 90 सेंटीमीटर बोई जाती है।

बीज की मात्रा

इसमें बीज की मात्रा लगभग 2.50 किलो प्रति हेक्टेयर मानी जाती है।

खाद एवं उर्वरक की मात्रा

खीरे की उन्नत फसल करने के लिए आपको खेत की तैयारी करते समय ही 6 टन गोबर की अच्छी से सड़ी खाद जुताई के समय खेत में मिला देना चाहिए। इसके अलावा आपको 20 किलोग्राम नाइट्रोजन, 12 से 15 किलोग्राम फास्फोरस, 10 से 15 किलोग्राम पोटाश की मात्रा अपने खेत में छिड़काव के द्वारा दे देनी चाहिए।

खेत में बिजाई के समय नाइट्रोजन की एक तिहाई मात्रा फास्फोरस की पूरी मात्रा तथा पोटाश की पूरी मात्रा खेत में भी देनी चाहिए। बची हुई नाइट्रोजन की मात्रा वह आप को दो बार में देनी चाहिए। बिजाई के एक महीने बाद वह फूल आने के समय खेत में आपको नाइट्रोजन की बची मात्रा दे देनी चाहिए।

सिंचाई

बरसात में खीरे की फसल लगाने पर इसमें सिंचाई की ज्यादा आवश्यकता नहीं होती है परंतु वर्षा का अंतराल अधिक होने पर आपको एक से दो सिंचाई कर देनी चाहिए। यदि खेत में नमी कम होगी तो खीरे के फल कड़वी रहने की संभावना बनी रहती है ।इसलिए खेत में नमी बरकरार रहनी चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण

खीरे की फसल में अन्य फसलों की तरह ही खरपतवार नियंत्रण आवश्यक होता है। बुवाई के 15 से 20 दिन बाद आपको एक बार निराई गुड़ाई अवश्य कर देनी चाहिए ।जिसके फल स्वरुप खरपतवार का नियंत्रण हो सके। पूरी फसल में तीन से चार बार निराई गुड़ाई कर खरपतवार से छुटकारा पा सकते हैं।

रोग

1. कुकुम्बर ग्रीन मोटेल वायरस

यह बहुत ही हानिकारक रोग है ।

लक्षण:

यह रोग अपना प्रभाव नए पत्तियों के साथ हरा, हल्का हरा रंग के धब्बे, पीले, हल्के पीले रंग के धब्बों पर हाबी होता है। यह धीरे धीरे पत्तियाँ को नष्ट कर देता है। जिस कारण फल छोटे, फलों का बनना कम हो जाता है। यह उपज में 25% नुकसान भी पहुचाता है।

उपचार

1. इस रोग के नियंत्रण के लिए डाईमैथुएट 0.05% दवा का छिड़काव 10 दिन के अंतराल पर करें।
2. विषाणू मुक्त बीज का उपयोग करे।

2. चूड़ी फफूंद रोग:

लक्षण

इस रोग में विशेष रूप से खीरे की खरीफ वाली फसल पर लगता है। सबसे पहले यह पत्तियाँ और तानो की सतह पर सफेद धुंधले धब्बों की तरह दिखाई देता है। इसके बाद यह धब्बे चूर्ण युक्त हो जाते है। अंत मे यह चूर्ण पूरे पौधे को अपनी चपेट में ले लेता है। जिससे पौधों से पत्ते गिर जाते है।

उपचार

- फफूंद नाशक दवा जैसे तरीडिमोर्फ आधा मिलीलीटर दवा 1लीटर पानी के साथ या फ्लूसिलजोल 1 ग्राम प्रति लीटर पानी के साथ 7 से 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।
- रोग ग्रस्त पौधों को खेत मे जला देते है।

कीट

3. खीरे का पतंगा

यह बहुत ही हानिकारक होती है ।

इस कीट की सूड़ी लंबी गहरे हरे रंग की पतली सी होती हैं। यह कीट पत्तियों के कोलोरोफिल भाग को खा लेते हैं। कभी कभी फूल को भी खा लेते है। जिससे पौधे बहुत ही कमजोर हो जाते है।

रोकथाम

- कीट नाशक दवाओं का प्रयोग करना चाहिए जैसे कि डायकलारोआस 76 ईसी का छिड़काव करना चाहिए। सूड़ीयो को एक जगह करके नष्ट कर देना चाहिए।

पैदावार

हरे एवं चिकने खीरे की औसत उपज 60 से 80 कुंतल प्रति हेक्टेयर प्राप्त किये जा सकते हैं।